विश्व के लिए प्रार्थनाएँ

सभी सर्वत्र तृप्त व सुखी हों।
सभी सर्वत्र निरामय अर्थात् स्वस्थ और निरोगी हों।
सभी सर्वत्र वही देखें जो कल्याणकारी व मंगलमय हो।
किसी को कभी दुःख न हो।

वैश्विक प्रार्थना, श्लोक ४

आकाश, अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी, सूर्य और चमचमाते नक्षत्रगण,
समस्त प्राणी, दिशाएँ, वृक्ष और पौधे, नदियाँ और समुद्र—
यह सम्पूर्ण सृष्टि परमेश्वर के शरीर का अंश है।
यह जानकर, भक्त को भगवान पर एकाग्रचित्त होकर
इस विश्व को अपने प्रणाम अर्पित करने चाहिए।

श्रीमद्भागवतम्, ११.२.४१

हे इस जगत के त्राता [संरक्षक], देवो, हम पर अपने आशीर्वादों की वर्षा करें।
हमें आशीर्वाद दें जिससे कि निद्रा, आलस्य और व्यर्थ की बातचीत
हमारे विचारों, शब्दों और कार्यों को अपने वश में न कर लें।
हम सदैव ज्योर्तिमय और नित्य ईश्वर के प्रिय बने रहें।
दृढ़ निश्चय व पुरुषार्थ के साथ, हम परम सत्य का अध्ययन करें
और उसी के विषय में बातें करें।

ऋग्वेद, ८, ४८.१४

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।